हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

एवं

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

के संयुक्त तत्वावधन में आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक : 22-28 जून, 2018

प्रतिवेदन/रिर्पोट

कार्यशाला

कार्यक्रम विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	कार्यक्रम स्थल	अवधि	आयोजक
सात दिवसीय हिंदी शिक्षण कार्यशाला	राष्ट्रीय कार्यशाला	धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश	22-28 जून, 2018	हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा तथा हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में सात दिवसीय हिंदी शिक्षण कार्यशाला का आयोजन (दिनांक 22-28 जून, 2018)

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) एवं हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 22-28 जून, 2018 को हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के शिक्षा स्कूल में हिंदी अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों हेतु हिंदी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 72 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला समन्वयक प्रोफेसर मनोज कुमार सक्सेना

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिमाचल प्रदेश सरकार के खाद्य एवं उपभोगता मामले के मंत्री श्री किशन कपूर जी वक्तव्य देते हुए

, अध्यक्ष, शिक्षा स्कूल ने आयोजन समिति बनाकर विधिवत कार्य को संचालित किया। 15 विषय-विशेषज्ञों ने सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में हिंदी भाषा, व्याकरण एवं साहित्य से जुड़े विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिया। हिंदी भाषा की व्याप्ति

उसके विविध पहलुओं, भारतीय संस्कृति, भाषाई एकता, हिंदी शिक्षण एवं उनके तकनीकी-प्रयोग, भारतीय मूल्य तथा शिक्षा के वैश्विक परिदृश्य पर भी गंभीरता पूर्वक विचार किया गया।

दिनांक 22.06.2018 को प्रशिक्षण कार्यशाला का उदघाटन मुख्य अतिथि, हिमाचल प्रदेश सरकार के खाद्य एवं उपभोगता मामले के मंत्री **श्री किशन कपूर** ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण हमेशा हमें कुछ नई सीख दे जाता है, हमें उस पर अमल करने की जरूरत है। मुझे उम्मीद है कि इस सात दिवसीय कार्यशाला से हिंदी अध्यापकों एवं प्राचार्यों की दक्षता में वृद्धि होगी। वे हिंदी के विस्तार एवं अधुनातन ज्ञान से परिचित हो सकेंगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी का विकास एवं प्रसार आज समय की आवयश्कता हो गई है। उसकी गति अबाध है। वह ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण भाषा है। उसका वैश्विक धरातल विपुल है। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर कुलदीप चंद अग्निहोत्री, कुलपति, हिमाचलप्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने हिंदी भाषा एवं साहित्य के वैविध्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी का विकास बोलियों से हुआ है, वह जनभाषा है, वह लगभग पूरे देश की संपर्क भाषा है, वह पूर्णतः समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है, वह आज विदेशों में भी लोकप्रिय हो रही है, उसकी व्याप्ति जन-जन तक है। इस प्रकार की कार्यशालाएँ हिंदी अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों

कार्यशाला में वक्तव्य देते हुए प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

के लिए बहुत उपयोगी होंगी। इस अवसर पर प्रो. मनोज कुमार सक्सेना ने सात दिवसीय कार्यशाला की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की तथा कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन, शिक्षा स्कूल के प्राध्यापक डॉ. नवनीत शर्मा ने किया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता प्रोफेसर आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने हिंदी भाषा के वैविध्य एवं वैशिष्टय पर प्रकाश डाला। प्रो. शर्मा ने हिंदी भाषा के विकास क्रम उसके विविध रूप तथा बोली से भाषा बनने के क्रमिक सोपान का विश्लेषण करते हुए उसकी प्रभावशीलता को रेखांकित किया।

द्वितीय सत्र में शिक्षा स्कूल के डॉ. नवनीत शर्मा ने शिक्षण पर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने शिक्षण के साथ-साथ हिंदी शिक्षण की भी विस्तार से विवेचना की तथा प्रभावी शिक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रभावी शिक्षण कैसे जीवन की स्मृति बन जाती है जिसे लोग भूल नहीं पाते। शिक्षक से ऐसे ही प्रभावी शिक्षण की उम्मीद हम इस कार्यशाला के बाद करेंगे। मुझे उम्मीद है कि सभी शिक्षक इस मानदंड पर खरे उतरेंगे।

तृतीय सत्र में डॉ. जयप्रकाश ने 'हिंदी प्रसार एवं पत्रकारिता' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अच्छी पत्रकारिता के लिए सक्षम हिंदी भाषा की जरूरत होती है। आज हिंदी पूर्णत: सक्षम भाषा है। ज्ञान-विज्ञान, पत्रकारिता एवं अन्यान्य क्षेत्रों में हिंदी का प्रसार बढ़ा है। तकनीकी रूप से भी इसकी व्याप्ति बढ़ी है। जनसंपर्क स्थापित करने में हिंदी भाषा सहायक रही है। उसके मुहावरों एवं लोकोक्तियों में लोक की अनुगूँज विद्यमान है। उसके रूप में स्थिरता आयी है। उसने मानक स्वरूप को प्राप्त किया है।

दिनांक 23.06.2018 को **प्रथम** सत्र में **प्रो. अवधेश कुमार**, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने हिंदी साहित्य के विकास क्रम में काल विभाजन की चर्चा करते हुए हिंदी साहित्य के प्रथम काल 'आदिकाल' पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कालिदास के सहारे शिक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "शिक्षक का ज्ञान गहन होना चाहिए, उस गहन ज्ञान को संप्रेषित करने की कला होनी चाहिए तथा वह ज्ञान अद्यतन होना चाहिए तभी वह सबका सिरमौर होता है" प्रो. कुमार ने कहा कि लक्ष्य विहीन पढ़ाई का कोई उद्देश्य नहीं है, लक्ष्य केन्द्रित पढ़ाई ही उपयोगी होगी। उन्होंने प्रधानमंत्री की योजना "संकल्प से सिद्धि की ओर" पर भी संकेत किया तथा कहा कि बिना संकल्प के लक्ष्य को नहीं प्राप्त किया जा सकता। उन्होंने आदिकाल के नामकरण, काल विभाजन उसके विविध साहित्य (सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य तथा लौकिक साहित्य) पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षक में निर्भीकता होनी चाहिए। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो विरोध कर सकता है, पर यह विरोध, विरोध के लिए विरोध न होकर, सामंजस्य स्थापित करने के लिए होना चाहिए। आदिकाल का साहित्य अपभ्रंश से प्रभावित है। वह हिंदी का प्रारम्भिक काल है पर वैविध्य से परिपूर्ण है।

द्वितीय सत्र के विशेष वक्ता **डॉ. कुलदीप कुमार**, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने साहित्य के अध्ययन-अध्यापन और आस्वादन पर अपना विचार व्यक्त करते हुए बताया कि शास्त्र क्या है ? परंपरा क्या है ? भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य का अंतर क्या है ? उन्होंने कहा कि साहित्य में जहाँ शब्द और अर्थ दोंनों साथ मिलकर हित करें वह साहित्य कहलाता है। उन्होंने हिंदी शिक्षण के लिए मूल्यों की संस्कृति और एकात्मकता की शिक्षा को अनिवार्य माना।

तृतीय सत्र का बीज वक्तव्य **प्रो. अवधेश कुमार**, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने दिया। उन्होंने हिंदी साहित्य के भक्तिकाल पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भक्तिकाल हिंदी का स्वर्णकाल है, यह भाव एवं भाषा की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध है। भक्ति आन्दोलन अखिल भारतीय आन्दोलन था। इसमें दक्षिण से नयनार और आलवार, पंजाब से नानकदेव, महाराष्ट्र से नामदेव, तुकाराम, समर्थगुरु रामदास, गुजरात से नरसी मेहता, बंगाल से चैतन्य महाप्रभु आदि के साथ यह भक्ति आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। निर्गुण-सगुण भक्ति के माध्यम से भक्तिकालीन कवियों ने अहंकार के विसर्जन के साथ मानवता का पाठ पढ़ाया तथा मानव मात्र की एकता का प्रतिपादन किया। भक्ति के विविध रूपों की चर्चा करते हुए नवधा भक्ति को व्याख्यायित किया। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, रहीम, रसखान आदि की चर्चा करते हुए उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख भी किया।

चतुर्थ सत्र में बीज वक्तव्य देते हुए **डॉ. देशराज** ने कहा कि शिक्षा का कार्य चुनौतियों का समाधान देना है। समय-समय पर शिक्षा में बदलाव आवश्यक है। समाज में बदलाव के आधार पर शिक्षा को आगे बढ़ाना पड़ता है। बदलाव के बीच में मिले अनुभव बहुत कुछ सिखा देते हैं। शिक्षा के बीच की चुनौतियाँ राष्ट्र और समाज सबको प्रभावित करती हैं । शिक्षा ऐसी हो जो स्वतंत्र चिंतन दे सके। शिक्षा का माध्यम क्या हो ? इस पर हमें चिंतन करना चाहिए। मातृभाषा में दी गई शिक्षा अधिक कारगर

होती है। शिक्षा राष्ट्र, समाज एवं लोकहित में होनी चाहिए, समाज के प्रवाह का ज्ञान या बदलते समय की पहचान शिक्षा के लिए अनिवार्य तत्व है।

दिनांक 24.06.2018 को **प्रथम सत्र** में मुख्य वक्तव्य देते हुए **प्रो. बी.के कठियाला**, पूर्व कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल ने संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की व्यापकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिंदी एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से जोड़ने का कार्य करती है। हिंदी भारतीय सन्दर्भों में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, वह उससे भी ज्यादा समझी जाने वाली भाषा है। वह व्याकरण की दृष्टि से परिष्कृत एवं मान्य भाषा है। पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधने वाली सम्पर्क भाषा है, संपर्क भाषा के रूप में इसकी स्वीकृति बढ़ रही है।

द्वितीय सत्र में **प्रो. अवधेश कुमार**, वर्धा ने हिंदी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल की व्याख्या करते हुए कहा कि रीतिकाल में मुख्यतः दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं- 1.शास्त्रीयता 2.श्रृंगारिकता। शास्त्रीयता में रस, अलंकार एवं काव्यांगों का विवेचन है। श्रृंगारिकता रीतिकाल की स्नायुवों में बहने वाली रक्तधारा है। काव्य की निपुणता एवं भाषा की कमनीयता रीतिकाल की प्रमुख विशेषता है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रीतिकाल को तीन वर्गों में विभाजित किया है, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त। चिन्तामणि, देव, भिखारीदास आदि रीतिबद्ध कवि हैं जो शास्त्रीय परंपरा का अनुगमन करते हुए लक्षण ग्रन्थ लिखने का प्रयास कर रहे थे। बिहारी लाल रीतिसिद्ध कवि हैं जो शास्त्रीय परंपरा का सायास अनुगमन तो नहीं करते, पर उनकी कविताओं में वे लक्षण स्वतः विद्यमान है। घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर रीतिमुक्त कवि हैं जो शास्त्रीय रीति परंपरा को अस्वीकार्य करते हुए उन्मुक्त भाव से हृदय से निकली हुई अनुभूति को कविता मानते हैं। रीतिकाल का वर्ण्य विषय सीमित है पर भाषा की प्रांजलता, कमनीयता, बहुअर्थता उसका केंद्रीय आकर्षण है।

तृतीय सत्र में **प्रो. अवधेश कुमार**, वर्धा ने हिंदी के आधुनिक काल पर विस्तार से विवेचना करते हुए उसके काव्य एवं गद्य रूपों की चर्चा की। काव्य में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, अकविता, साठोत्तरी कविता, प्रतिबद्ध कविता, जनवादी कविता तथा उत्तरआधुनिक कविता की विस्तार से चर्चा करते हुए भारतेंदु से लेकर लीलाधर जगूड़ी और आलोक धन्वा तक की समीक्षा प्रस्तुत की ।

चतुर्थ सत्र में **डॉ. विवेक शर्मा**, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला "वाचिक हिंदी के उच्चारण की कठिनाइयाँ" विषय पर व्याख्यान देते हुए उसके महत्वपूर्ण उदाहरणों से बात की पुष्टि की। उन्होंने कहा कि हिंदी में ऐसे अनेक शब्द हैं जिनका हम उच्चारण सतर्क न रहने के कारण ठीक से नहीं कर पाते हैं। चाबी, जनता, आशीर्वाद, आमदनी, सुश्रुषा, अन्योन्याश्रित, विश्व आदि ऐसे अनेक शब्द है जिनका उच्चारण करते समय सतर्क रहना पड़ता है। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा मूलतः बोलियों से विकसित है, इसलिए स्थानीय बोलियों का प्रभाव हिंदी भाषा में पाया जाता है, जिसे स्वाभाविक कहा जा सकता है, जो भाषा के विकास का चरण है।

पंचम सत्र में **डॉ. चन्द्रकांत सिंह**, सहायक प्रोफेसर हिंदी, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "प्रेमचन्द के पूर्व नाटकीय परिकल्पना एवं प्रेमचन्द के नाटक" विषय पर व्याख्यान दिया। प्रेमचंद के नाटक 'संग्राम', 'कर्बला' और 'प्रेम की बेदी' नाटकों की चर्चा करते हुए उसे जीवन के लिए सीधे उपयोगी बताया। उसमें समाज-सत्य का उद्घाटन एवं उसकी समस्याओं का चित्रण है। नाटक श्रव्य एवं दृश्य दोनों विधा है इसलिए उसका प्रभाव जनता पर और अधिक पड़ता है। अंत में डॉ. कुलदीप कुमार ने सभी वक्ताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

दिनांक 25.06.2018 के **प्रथम सत्र** में **प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री**, कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "अखंड भारत और भाषा" विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि जब हम देश की अखंडता की बात करते हैं तो भाषाई

संवाद और भाषाई एकता भी इसका महत्वपूर्ण आयाम होता है। यदि किसी देश की भाषाओं में आपसी संवाद न हो और एक दूसरे से सीखने की प्रक्रिया नदारद हो तो नागरिकों में एकता का भाव पैदा नहीं हो सकता। भाषाई समरसता राष्ट्रीय अखंडता व एकता की पूर्व शर्त है। उन्होंने कहा कि अपने देश में भाषाई बराबरी में निरंतर कमी आई है, भाषाई पदानुक्रम पैदा हुआ है। इसके कारण हमारे देश के नागरिकों में विभिन्न भाषाओं को लेकर श्रेष्ठता या हीनता का भाव पैदा हो गया है। इस भाषाई हीनता या श्रेष्ठता के भाव को खत्म करके ही अखंड भारत की संकल्पना की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। इस सत्र का संचालन डॉ. नवनीत शर्मा ने किया।

द्वितीय सत्र में **डॉ. नवनीत शर्मा,** सहायक प्रोफेसर, शिक्षा स्कूल, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "हिंदी और औपनिवेशिक मानसिकता" विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा की भारत का प्रशासनिक क्रियाकलाप औपनिवेशिक मानसिकता से संबंधित अंग्रेजी है जिसके कारण रोजमर्रा की जिन्दगी में आमजनों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। भाषा को लेकर दोहरी नीति अपनाई जा रही है। अंग्रेजी का वर्चस्व है तथा हिंदी जिस गौरव की अधिकारी है उसे वह गौरव अभी मिल नहीं पाया है पर उस दिशा में प्रयास ज़ारी है। हिंदी के पक्ष में सभी स्तरों पर माहौल बन रहा है जिसे शुभ लक्षण कहा जा सकता है। इस सत्र का संचालन डॉ.जय प्रकाश सिंह ने किया।

कार्यशाला में विषय-विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री, कुलपति, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

तृतीय सत्र में डॉ. जय प्रकाश सिंह, सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "भाषा क्रियोलीकरण और पत्रकारिता" विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि उदारीकरण कीप्रक्रिया के कारण हिंदी भाषा में अंग्रेजी शब्दों की घुसपैठ बढ़ रही है। बोलचाल की हिंदी से लेकर समाचार पत्रों की हिंदी तक में यह आसानी से दिखाई पड़ती है, एक ही वाक्य में कई अंग्रेजी शब्द अटके पड़े हैं। ये सच है कि कोई भाषा स्थिर नहीं होती। वह अन्य भाषाओं से संवाद करती है और उनसे शब्दों को उधार लेती है, ये आवा-जाही भाषा में लगातार चलती रहती है। विज्ञापनों से लेकर बोलचाल तक में अंग्रेजी भाषा की बढ़ती घुसपैठ के कारण इस भाषा का स्वरूप बदला हुआ प्रतीत होता है। उन्होंने कहा कि किसी भाषा के प्रति द्वेष न रखते हुए भी यह आवश्यक है कि वह अपनी भाषा का मूल स्वरूप बनाए रखे। बौद्धिकता के प्रमाण के लिए हिंदी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का बलात प्रयोग उचित नहीं कहा जा सकता, इससे बचने एवं सतर्क रहने की जरूरत है। किसी भाषा के शब्द यदि सहज रूप में आते हैं तो उसे स्वीकार किया जाना चाहिए पर अपनी भाषा पर दृढ़ रहते हुए ही यह संभव हो सकेगा। इस सत्र का संचालन डॉ. नवनीत शर्मा ने किया।

चतुर्थ सत्र में **डॉ. नवनीत शर्मा**, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा स्कूल हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "स्कूल, समाज और हिंदी" विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि स्कूल की हिंदी और आमजनों में बोली जाने वाली हिंदी में अंतर है। वर्तनी की त्रुटियों का निवारण, उच्चारण की शुद्धता, स्थानीयता के दबाव से मुक्ति, व्याकरण का ज्ञान, रूप का स्थिर होना, भाषा का परिमार्जन आदि बातें मानक हिंदी के लिए आवश्यक हैं। स्कूल की हिंदी का मानक स्तर होना ही चाहिए। इस सत्र का संचालन डॉ. जय प्रकाश सिंह ने किया।

दिनांक 26.06.2018 को **श्री विजय नड्डा** ने प्रथम सत्र में "भाषा प्रयोग का विवेक, संदर्भ: आयु, वर्ग, श्रोता, समूह तथा नैतिकता का प्रश्न" विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए समाज में आपसी संबंधों को स्थापित करने के लिए नैतिकता को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि लोगों में आपसी संबंध से आत्मीयता का विकास होता है और आत्मीयता से संबंधों में स्थायित्व आता है। हिंदी भाषा प्रत्येक आयु वर्ग को एक दूसरे से जोड़ती है और इसके द्वारा नैतिकता स्थापित की जाती है।

द्वितीय सत्र में **माननीय कुलपति, प्रोफेसर कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री** ने "भाषा विवेक एवं प्रयोग" विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को महत्व देना चाहिए तथा अपनी भाषा का प्रयोग करते हुए आत्मग्लानि या हीनता का भाव नहीं होना चाहिए। आज हिंदी का महत्व निरंतर बढ़ रहा है अखिल भारतीय स्तर पर लोग हिंदी में बात करने लगे हैं। हिंदी की वस्तुस्थिति पर विचार करते हुए, उसकी वास्तविकता से परिचित होते हुए हिंदी को अधिक-से-अधिक उपयोग में लाना चाहिए।

तृतीय सत्र में **प्रो. अशोक सरियाल** ने "शिक्षा और वैश्विक परिदृश्य" विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि आज विदेशों में बच्चे हिंदी भाषा को आसानी से समझ पाते हैं। आज हिंदी दुनिया के कई देशों में बोली, पढ़ी और समझी जाती है। विश्व हिंदी सम्मेलनों ने भी हिंदी के विकास एवं विस्तार में सहयोग दिया। मॉरीशस, त्रिनिडाड, सूरीनाम, गुयाना, फिजी, चीन, श्रीलंका, भूटान, नेपाल, बांग्लादेश आदि कई देशों में हिंदी की पढ़ाई हो रही है। लोग आसानी से हिंदी समझ रहे हैं। वह वैश्विक स्तर पर ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ व्यापार वाणिज्य की कारगर भाषा सिद्ध हुई है।

चतुर्थ सत्र में **प्रो. अशोक सरियाल** ने "शिक्षा और वैश्विक परिदृश्य में हिंदी" विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए। माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा अनिवार्य होनी चाहिए। हिंदी आज पूरे देश की राजभाषा तथा व्यवहार में संपर्क भाषा के रूप में कार्य कर रही है, उसकी गति वैश्विक स्तर पर निरंतर बढ़ रही है। उसके प्रति लोगों का विश्वास बढ़ा है तथा आत्मगौरव का भाव जगा है। सत्र के अंत में डॉ. अर्चना कटोच ने सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

दिनांक 27.06.2018 को प्रथम सत्र में **प्रो. बलवान गौतम**, प्रोफेसर, अम्बेडकर पीठ, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "हिंदी में पाठ्यसामग्री : उपलब्धता एवं निर्माण की चुनौती" विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी में पाठ्यसामग्री की उपलब्धता सहज रूप से होनी चाहिए साथ ही इंटरनेट पर भी हिंदी से सम्बन्धित विषय सामग्री को अधिकाधिक रूप में उपलब्ध कराने के लिए भी प्रयत्नशील होना चाहिए। पाठ्यसामग्री समयानुकूल हो, जो विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में सहायक हो, पाठ्यसामग्री में शारीरिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, भारतीय मूल्य शिक्षा तथा योग का समावेश होना चाहिए। पाठ्यसामग्री में ज्ञान के विकास के साथ-साथ कौशल विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए तथा भारत की सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरण, आदि को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। सत्र का संचालन डॉ. जयप्रकाश सिंह ने किया।

द्वितीय सत्र में **प्रो. बलवान गौतम**, फ्रोफेसर,अम्बेडकर पीठ, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "हिंदी माध्यम में शिक्षण : कठिनाइयाँ एवं संभावनाएँ" विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि अब विज्ञान एवं कानून की पढ़ाई का माध्यम हिंदी भाषा हो सकती है। हिंदी भाषी राज्यों में इन विषयों की पढ़ाई तो हो रही है, पूरे भारत में भी इन विषयों की पढ़ाई हिंदी माध्यम में होनी चाहिए या विकल्प उपलब्ध होना चाहिए। चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में प्रायः यह कहा जाता है कि इसकी पढ़ाई केवल अंग्रेजी माध्यम में ही संभव है, पर यह धारणा अब टूट रही है। अब सभी विषयों की पढ़ाई हिंदी माध्यम में पूरी तरह संभव है। स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी में वेब पोर्टल होना चाहिए। हिंदी की अच्छी पाठ्यसामग्री अपलोड होनी चाहिए, जिसका लाभ विद्यार्थी, अध्यापक एवं शोधार्थी सभी उठा सकें।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि मा. श्री किशन कपूर जी का स्वागत करते हुए मा. कुलपति, प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री एवं अन्य अतिथिगण

तृतीय सत्र में **प्रो. बलदेव भाई शर्मा**, प्रोफेसर,जनसंचार एवं न्यू मीडिया, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "हिंदी और राष्ट्रीय एकता" विषय पर मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि हिंदी ही एक ऐसी संपर्क भाषा है जिससे राष्ट्रीय एकता संभव है। स्वाधीनता आन्दोलन की अधिकांश लड़ाई हिंदी भाषा में लड़ी गई। लाल, बाल, पाल, सुभाष, गाँधी, गोखले, राजगोपालाचारी आदि सभी ने सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया।

चतुर्थ सत्र में **प्रो. बलदेव भाई शर्मा**, प्रोफेसर, जनसंचार एवं न्यू मीडिया, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला नें "हिंदी भाषा : उद्भव, विकास और वर्तमान" विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी भाषा में पाठ्यसामग्री का समुचित प्रबन्धन एवं उपलब्धता नहीं होने से कुछ कठिनाइयाँ संभव हो सकती हैं। ऐसा नहीं है कि हिंदी की विषय सामग्री नहीं है अपितु उसका संग्रह एवं समुचित प्रबन्धन नहीं होने के कारण कठिनाइयाँ प्रतीत हो रही हैं। अतः वर्तमान समय में विषयवार पाठ्यसामग्री को संग्रहीत करने एवं उनका समुचित प्रबन्धन नितांत आवश्यक है। आज हिंदी भाषा अपने उद्भव काल से लेकर इतनी समृद्ध और व्यापक हो गई है कि वर्तमान समय की सभी चुनौतियों का सामना करने में पूरी तरह सक्षम है। सत्र के अंत में डॉ. जयप्रकाश सिंह ने विषय-विशेषज्ञ एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

दिनांक 28.06.2018 को **प्रथम सत्र** में **प्रो. बलदेव भाई शर्मा**, प्रोफेसर, जनसंचार एवं न्यू मीडिया, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "हिंदी का पाठ्यक्रम निर्माण एवं प्रयोग" विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में हिंदी भाषा का प्रयोग होना चाहिए, जिससे हिंदी का संवर्धन व विकास होगा। पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय चिंतन, मर्यादा, स्वाधीनता संग्राम सेनानियों एवं महापुरुषों की जीवनी एवं स्थानीय वस्तु स्थिति का ध्यान रखना चाहिए। हिंदी का पाठ्यक्रम

सुविचारित, सुचिंतित एवं राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत होना चाहिए। प्रयोग के स्तर पर पाठ्यक्रम समयानुसार निरंतर बदलता रहना चाहिए तभी उसकी उपयोगिता सिद्ध हो सकेगी।

द्वितीय सत्र में **प्रो. प्रदीप नायर**, प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्ष, **जनसंचार एवं न्यू मीडिया**, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "हिंदी और मीडिया" विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि आज 'हिंदी' मीडिया को अत्यधिक प्रभावित कर रही है और मीडिया भी हिंदी का विकास कर रहा है। हिंदी को बढ़ाने में मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रोनिक) की बहुत बड़ी भूमिका है, वह जनभाषा हिंदी के माध्यम से आंचलिक हिंदी को भी प्रश्रय दे रही है, दोनों में अन्योन्याश्रित संबंध है।

तृतीय सत्र में **प्रो. बलवान सिंह**, प्रोफेसर, अम्बेडकर पीठ, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "हिंदी का समाजशास्त्रीय वर्चस्व" विषय पर विचार करते हुए कहा कि शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है और माध्यम उसका एक हिस्सा है, वर्तमान में सामुदायिक रहना, सामुदायिक सोच व सामुदायिक कार्य करना चाहिए। इस प्रकार की ऊँची सोच होनी चाहिए। इन विषयों पर गंभीरता के साथ ही व्यावहारिक रूप से सूक्ष्म तथा व्यापक स्तर पर कार्य करना चाहिए। सामुदायिकता के विकास के साथ-साथ हिंदी का भी विकास होगा।

चतुर्थ सत्र में **प्रो. बलवान सिंह**, प्रोफेसर, अम्बेडकर पीठ, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने "विभिन्न क्षेत्रों व संस्थाओं में हिंदी का स्वरूप" विषय पर बोलते हुए कहा कि भारत में अनेक भाषाएँ हैं जो अथाह ज्ञान के सागर हैं। हमारे मन में किसी भी भाषा के प्रति दुराग्रह नहीं होना चाहिए। अपनी भाषा के प्रति दृढ़ता एवं आत्मसम्मान का भाव रखते हुए दूसरी भारतीय भाषा के प्रति आदर का भाव होना चाहिए। पूरे भारत को हिंदी भाषा के व्यवहृत रूप की दृष्टि से तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रथम क्षेत्र में पूर्ण हिंदी भाषी राज्य-उदाहरणार्थ-दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार आदि। द्वितीय क्षेत्र में अर्द्ध हिंदी भाषी राज्य- पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात आदि तथा तृतीय क्षेत्र में गैर हिंदी भाषी राज्य जैसे- केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना आदि। आज भारत सरकार एवं अन्य केंद्रीय उपक्रमों में हिंदी राजभाषा का प्रयोग निरंतर हो रहा है तथा लगातार प्रगति की ओर है। भारत सरकार के अधीन हिंदी की कई संस्थाएं हिंदी के विकास में कार्य कर रही है।

कार्यशाला में उपस्थित अतिथि, विषय-विशेषज्ञ एवं प्रतिभागीगण

समापन सत्र के मुख्य वक्ता **श्री ललित बिहारी गोस्वामी** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी राजभाषा नहीं है, परन्तु सम्पर्क भाषा जरुर है। जो अपनी परिस्थितियों से असंतुष्ट होता है वही आगे बढ़ता है। उसी प्रकार हिंदी भी आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक बढ़ती रही है और आगे भी बढ़ती रहेगी। भक्तिकाल हिंदी का स्वर्ण काल रहा है। वह काल वस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से अद्भुत काल था। वस्तु की व्यापकता और शिल्प की कमनीयता इस काल की प्रमुख विशेषता है। पूरे विश्व में हिंदी का स्थान आज कहाँ है? नहीं है तो क्यों? उन्होंने कहा कि हिंदी एक समृद्ध भाषा है, विश्व में कहीं भी स्थान ले सकती है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपयी और प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी ने हिंदी में यू.एन.ओ.(UNO) में भाषण दिया। आचार्य रघुवीर का उदाहरण देते हुए कहा कि जो अपनी भाषा का सम्मान नहीं करते उन्हें हम पसंद नहीं करते। समापन व्यक्तव्य देते हुए प्रोफेसर मनोज कुमार सक्सेना, अधिष्ठाता, शिक्षा स्कूल, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला एवं कार्यशाला समन्वयक ने कार्यशाला के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि हमारा विश्वविद्यालय पहले पूर्ण रूप से अंग्रेजी माध्यम में था, माननीय कुलपति प्रो. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री ने सर्वप्रथम कुलपति कार्यालय एवं शिक्षा स्कूल को हिंदी माध्यम में किया। समन्वयक ने कहा कि यह सात दिवसीय प्रशिक्षण हिंदी अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ। इस कार्यशाला से शिक्षक और अधिक दक्ष, व्यवहार कुशल, नैतिक और कर्तव्य परायण हुए होंगे ऐसी उम्मीद है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक जो बताता है बच्चे उसे सही मानकर आत्मसात कर लेते हैं। बच्चों को सही ज्ञान देना जरुरी है क्योंकि वे भविष्य के कर्णधार हैं। इस कार्यशाला से अकादमिक वातावरण का निर्माण हुआ है। हिंदी अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों की इस कार्यशाला में हिंदी के बहुविध पक्षों पर जो पुनर्पाठ व व्याख्यान हुआ उससे प्रतिभागियों ने बहुत कुछ सीखा। ये अध्यापक प्रशिक्षण उपरांत अपने विद्यार्थियों को अधुनातन ज्ञान से शिक्षित करेंगे। प्रधानाचार्य हिंदी विषय के महत्व को गहराई के साथ समझ सकेंगे। सम्पर्क एवं माध्यम भाषा के रूप में उसका उपयोग संस्था हित में करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। कार्यक्रम के अंत में सुश्री मोनिका, सहायक प्रोफेसर, बी. बोक, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया तथा हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के सक्रिय सहयोग के लिए माननीय कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र सहित सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञपित किया।

ज्ञान शांति मैत्री